अध्याय 22

राष्ट्रीय आंदोलन

भारत हमेशा आजादी का हिमायती रहा है। यही कारण है कि भारत ने दुनिया में अपनी संस्कृति का तो विस्तार किया किन्तु राजनीतिक उपनिवेश स्थापित नहीं किए। कतिपय विदेशी लोग यहाँ की धन सम्पत्ति को लूटने के लिए हिन्दुस्तान आए तो कुछ लोग व्यापारी बनकर व्यापार करने आए। धीरे –धीरे उन्होनें यहाँ पर राज्य स्थापित करने की कोशिश की। किन्तु जैसे ही यहाँ के लोगों को लगा कि हमें गुलाम बनाने की कोशिश की जा रही है तो तुरन्त उनके खिलाफ संघर्ष प्रारम्भ हो गया। यह संघर्ष अनवरत चलता रहा। इस तरह इस देश में विदेशियों के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रक्रिया सतत् रूप से चल रही थी। भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन ऐसी ही एक प्रक्रिया थी, जिसमें हिन्दुस्तान के लोगों को यह आभास हुआ कि अंग्रेजी शासन और भारतवासियों के बीच एक मूलभूत विरोधाभास है, जिसके फलस्वरूप हिन्दुस्तान और उसके निवासियों को केवल नुकसान ही होता था। उस विरोधाभास का निराकरण तभी संभव था, जब अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़ कर चले जाएँ और यहाँ का शासन यहीं के लोगों के हाथों में हो। भारत में अंग्रेज जब से आए, तभी से हिन्दुस्तान के लोगों ने उनका अलग–अलग तरीके से विरोध किया।

यह जरूर था कि कभी लोग अंग्रेजों का विरोध करते तो कभी उनके साथ मिलकर काम करते। अधिकांश लोगों का तो जिन्दगी में कभी भी अंग्रेजों या उनकी सरकार से कोई सीधा वास्ता तक नहीं पड़ा। परन्तु यह भी सच है कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अंग्रेजी शासन से प्रभावित हो रहा था और वह चाहता था कि यह देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो।

गतिविधि :–
हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के बाद दुनिया के किन देशों से अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो गया ? एक सूची बनाइए। अपने अध्यापक की मदद लीजिये ।

किस दिन या किस वर्ष में स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुआ है ? इस तरह के सवाल का कोई जवाब नहीं है, क्योंकि इस तरह के आन्दोलन कई प्रकार की सरकार विरोधी गतिविधियों की समग्रता का नतीजा होते हैं।

कई इतिहासकारों ने यह माना कि आधुनिक तरीके से दल बना कर जो राजनीतिक आंदोलन उन्नीसवीं सदी में चला, वही स्वतंत्रता आन्दोलन है। परन्तु सही अर्थों में 1857 ई. की लड़ाई से ही स्वतन्त्रता की लड़ाई की शुरूआत हो गई थी। इसलिए कई इतिहासकारों ने उसे 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' कहा है । वहीं पर उसके बाद के जो राजनीतिक आंदोलन आया उसे 'स्वतंत्रता आन्दोलन' कहा गया।

उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में राष्ट्रीय आन्दोलन

उन्नीसवीं सदी में हिन्दुस्तानियों ने बहुत सारे संघ बना रखे थे। कोई संघ बंगाल के जमींदारों का था तो कोई अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों का और कोई दक्षिण के या पश्चिम के व्यापारियों का। ये सभी संघ सरकार को चिट्ठी–पत्री लिख कर शिकायत करते। माँग होती थी कि 'कर' कम कर दिया जाए, सरकारी नौकरी में

हिन्दुस्तानियों को भी बड़े पदों पर चुने जाने का मौका मिले, स्कूल खोले जाएँ, कानून व्यवस्था में हिन्दुस्तानियों को बराबर का दर्जा दिया जाए, विधान परिषदों में हिन्दुस्तानियों के लिए ज्यादा सीटें हों और उनके मतानुसार ही कार्यकारिणी काम करें आदि।

दिसम्बर 1885 ई. के आखिरी हफ्तें में एक अंग्रेज एलन आक्टेवियन ह्यूम के पहल करने पर इस तरह के संघो का एक सम्मेलन बुलाया गया।

1885 ई. की पहली कांग्रेस बैठक बम्बई के गोवालिया तालाब इलाके के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुई।

अंग्रेज विरोधी अंसतोष को वैधानिक रूप देने के लिए ए.ओ.ह्यूम ने नई संस्था का नाम 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' रखा गया। इस तरह 28 दिसम्बर 1885 ई. को बंबई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। इसके पहले अध्यक्ष बंगाल के व्योमेश चन्द्र बनर्जी को बनाया गया तथा इसके जनरल सेक्रेटरी अंग्रेज अधिकारी ए.ओ.ह्यूम बने।

अंग्रेजों का उपेक्षापूर्ण रवैया

आने वाले वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रस्तावों को लेकर एक बात साफ हो गई कि अंग्रेज सरकार इन पर कोई ध्यान नहीं देती थी। ध्यान देना तो दूर लोगों को यह लगा कि सरकार वास्तव में उन्हें तंग करने के कई नए तरीके ढूँढ़ रही थी। यह शक तब और मजबूत हुआ जब 1890 के दशक में मध्य भारत में अकाल फैला। अकाल के बावजूद सरकार ने बड़ी सख्ती से किसानों से लगान वसूल किया। एक तरफ किसानों की दुर्दशा हो रही थी, दूसरी तरफ सरकार गेहूँ निर्यात कर रही थी। यह विचार कि सरकार हिन्दुस्तानियों की कोई चिंता नहीं करती थी और भी अधिक प्रबल तब हुआ जब मध्य और पश्चिमी भारत में प्लेग का प्रकोप फैला। सरकार की अकर्मण्यता से असंतोष बढ़ने लगा। रही–सही कसर हैजा ने पूरी कर दी।

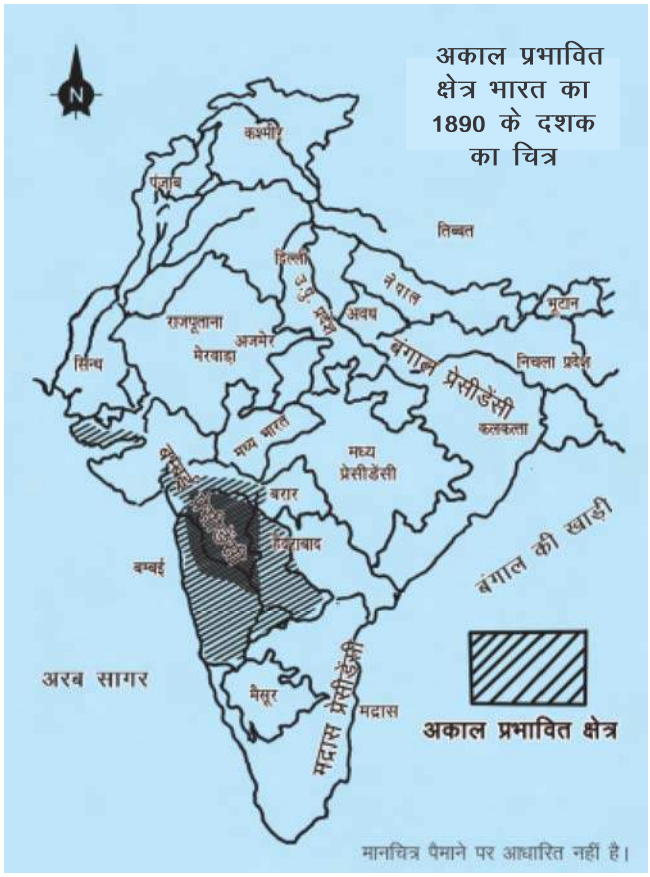

19वीं व 20वीं सदी में राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाएँ

कई हिन्दुस्तानियों ने सरकार द्वारा की जा रही जोर जबरदस्ती के खिलाफ आवाज उठाई। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने अपने अखबारों में इसके खिलाफ लेख लिखे जिनके नाम 'मराठा' और 'केसरी' थे।

ये अखबार उनके अन्याय के विरूद्ध लोहा लेने का प्रमाण रहे हैं। राजनीतिक आन्दोलन का तिलक ने एक मार्ग दिखाया, इसलिये उन्हें उग्रवाद का जनक कहा जाता है। उनका स्पष्ट मत था– "भारत में अंग्रेजी नौकरशाही से अनुनय–विनय करके हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।" शिवाजी और गणपति उत्सवों के माध्यम से तिलक ने देश में नई जागृति पैदा की। उन्होंने जनता में स्वराज्य का मंत्र फूंका, किन्तु इससे वे ब्रिटिश सरकार की आँखों की किरकिरी बन गये। चापेकर बन्धुओं द्वारा प्लेग कमिश्नर की हत्या की गई । इस हत्या पर अपने समाचार पत्र में की गई टिप्पणी को लेकर सरकार ने तिलक के विरूद्ध हिंसा व राजद्रोह का आरोप लगाकर उनको 18 मास की कठोर करावास की सजा दे दी। उनकी गिरफ्तारी पर जनता की रोषपूर्ण प्रतिक्रिया ने उन्हें 'लोकमान्य' बना दिया । जेल से छूटने पर उन्होंने जनशक्ति को स्वराज्य के लिये तैयार करने का कार्य किया तथा 'होमरूल' आन्दोलन का संचालन किया। तिलक के प्रयासों से 1916 का 'लखनऊ समझौता' सम्पन्न हो सका। 1920 में उनका देहांत हो गया ।

साथ ही साथ बीसवीं सदी के शुरू में सरकार ने नगर निकायों और विश्वविद्यालयों पर से हिन्दुस्तानियों का नियंत्रण कम करने के लिए कानून भी बना डाले। कांग्रेस ने सरकार के इन कार्यकलापों के खिलाफ कई प्रस्ताव पारित किए परंतु इनका सरकार पर कोई असर नहीं हुआ।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय आन्दोलन

अति तो तब हुई जब प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने के नाम पर बंगाल का विभाजन (1905 ई. बंग–भंग) भी कर दिया गया। बंग विभाजन को लेकर सारे देश में रोष की लहर दौड़ गई । यहीं से देश में स्वदेशी आन्दोलन का शुभारम्भ माना जाता है। देश भर में सरकार की हरकतों के खिलाफ लोगों ने गुस्से भरे ज्ञापन सरकार को भेजे। 1907 ई. में कांग्रेस के सूरत सम्मेलन में लोगों के बीच इस विषय पर गर्मा–गर्म बहस हो गई।

पढ़ें और बतायें–

बंगाल विभाजन (1905 ई.) का सूरत अधिवेशन (1907 ई.) पर क्या असर दिखाई दिया ?

अब कांग्रेस में दो धड़े हो गए। एक पक्ष का कहना था कि लिखा पढ़ी के अलावा भी कुछ करना चाहिए, जैसे कि हड़ताल और अंग्रेजों का आर्थिक बहिष्कार आदि। ये लोग 'गरम दल' के लोग कहलाए। गरम दल में प्रमुख थे– पंजाब से लाला लाजपत राय, बंगाल से विपिनचन्द्र पाल और महाराष्ट्र से बाल गंगाधर तिलक। इन्हें लाल, बाल, पाल के नाम से भी जाना जाता हैं।

जब हड़तालों से भी कुछ नतीजा नहीं निकला तो बंगाल के कुछ नौजवानों ने तय किया कि जन मानस में अंग्रेजों के भय को कम करने के लिए उन पर कठोर प्रहार करना पड़ेगा। इन्होंने छोटे–छोटे गुट बनाकर हथियारों का इस्तेमाल सीखा। कुछ ने अंग्रेज अफसरों पर घातक हमले किए। सरकारी खजाने को लूटने की कोशिश की गई।

अतः बाध्य होकर के दिसम्बर 1911 ई. में दिल्ली में शाही दरबार का आयोजन करके उसमें बंगाल विभाजन को निरस्त करने की सरकार द्वारा घोषणा की गई। साथ ही यह भी कहा गया कि देश की राजधानी कलकत्ता से हटा कर दिल्ली में होगी।

प्रथम विश्व युद्ध से 1947 ई. तक राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरण

सन् 1914 ई. में यूरोप में प्रथम महायुद्ध शुरू हो गया। भारी मात्रा में हिन्दुस्तान के धन और सिपाहियों को इस युद्ध में झोंक दिया गया। हिन्दुस्तान की सभी रियासतों ने भी अंग्रेजों की मदद के लिए सैनिक एवं युद्ध सामग्री उपलब्ध कराई । अतः युद्ध समाप्त होने पर भारत में अधिकार प्राप्त होने की नई आशा का संचार होने लगा, किन्तु अंग्रेज सरकार ने 1919 ई. में एक कानून लागू किया।

इस कानून के अधीन सरकार का विरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को लंबे समय के लिए जेल भेजा जा सकता था। इस कानून को 'रोलेट एक्ट' का नाम दिया गया। रोलेट कानून के खिलाफ लोग अपना विरोध जाहिर कर रहे थे। एक विरोध सभा अमृतसर–पंजाब के जलियाँवाला बाग में भी हो रही थी। 13 अप्रेल 1919 ई. को होने वाली इस सभा को अमृतसर में नियुक्त अंग्रेज जनरल डायर ने सभा को विसर्जित होने का आदेश दिया। सभा विसर्जित हो, इसके पहले ही सेना ने सभा पर गोलीबारी शुरू कर दी। हजारों बेकसूर लोग मारे गए। अंग्रेज जनरल को इंग्लैंड में उसकी इस हरकत के लिए सम्मानित भी किया गया। बाद में जनरल डायर को क्रान्तिकारी उधम सिंह ने लंदन जाकर मारा था। सरकार को यह लगने लगा कि जनता के असंतोष को कम करना आवश्यक है । अतः 1919 ई. का अधिनियम पारित किया, जिसके अन्तर्गत प्रान्तों में द्वैध शासन स्थापित किया । इस अधिनियम से जनता की नाराजगी कम होने के स्थान पर बढ़ गई। इन सभी अनुभवों से अब हिन्दुस्तान के लोगों को अहसास होने लगा था कि उनके और अंग्रेजों के बीच कोई तारतम्य बनने की गुंजाइश नहीं है। तब जाकर मोहन दास करमचंद गाँधी की सलाह पर कांग्रेस ने तय किया कि सारा देश ही सरकार से असहयोग करेगा। यदि लोग सरकार से असहयोग करेंगे तो सरकार कैसे चलेगी ? यदि लोग अंग्रेजी वस्तुओं का इस्तेमाल न करें तो अंग्रेजों की अर्थव्यवस्था ही डगमगा जाएगी।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड

औपनिवेशिक शासन का विरोध करने वाले प्रमुख नेता

1920 ई. में असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया। गाँधीजी इसके नेता बने। गाँधीजी ने एक शर्त रखी कि आन्दोलन पूर्णरूपेण शान्तिपूर्ण रहेगा। अधिकांश समय तो लोग शान्तिपूर्ण तरीके से ही सरकार का विरोध करते, पर कभी–कभी असहयोग आन्दोलन हिंसक रूप भी ले लेता था। कई शहरों में सरकार के विरोध में दंगे हुए। गाँधीजी और अन्य नेता लोगों को समझाते कि

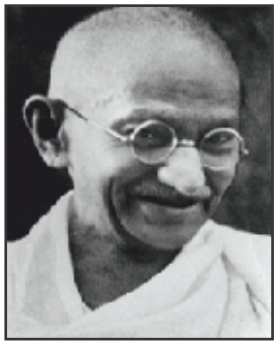

महात्मा गाँधी

आन्दोलन बगैर हिंसा के होना चाहिए। आन्दोलन ज्यादा से ज्यादा विस्तृत होने लगा। पर जब 1922 ई. में गोरखपुर जिले के चौरा–चौरी इलाके में एक पुलिस चौकी पर हमला करके आन्दोलनकारियों ने कई पुलिस वाले मार डाले तो गाँधीजी ने आन्दोलन खत्म करने की घोषणा कर दी।

साइमन कमीशन छः सदस्यों के साथ 3 फरवरी 1928 को बम्बई पहुंचा। इस कमीशन का एक भी भारतीय सदस्य नहीं था । अतः उसके विरूद्ध जनता में रोष उत्पन्न हुआ। परिणाम स्वरूप इस कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। विरोध को दबाने के लिये पुलिस ने दमन नीति अपनाई । इसलिये जब लाहोर में विरोध का नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे, तब पुलिस पदाधिकारी साण्डर्स ने उन पर लाठियाँ बरसाई, जिससे लाला लाजपत राय के सिर पर गंभीर चोटें आई। कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। लोगों ने लालाजी की मौत के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराया। भगतसिंह व उसके साथियों को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई। भगतसिंह अपने साथियों के साथ वैसे भी सरकार द्वारा हिन्दुस्तानियों पर की जा रही ज्यादतियों का विरोध करते थे। भगतसिंह एवं उनके साथियों ने अंग्रेज पुलिस अधिकारी साण्डर्स की गोली मार कर हत्या कर दी। कुछ समय बाद इन लोगों ने योजना बनाकर केन्द्रीय विधान सभा के अन्दर एक बम विस्फोट किया।

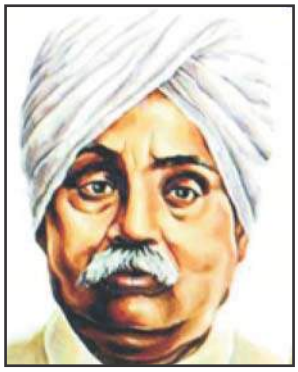
लाला राजपत राय

भगतसिंह और साथियों ने कहा कि यह बम सरकार के बहरे कानों को जगाने के लिए फोड़ा गया है, किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं। भगत सिंह और उसके साथियों को गिरफ्तार कर उन्हें फाँसी की सजा दी गई । 23 मार्च, 1931 ई. के दिन भारतीय स्वतंत्रता के इस महान् सेनानी को उनके दो अन्य साथियों सुखदेव एवं राजगुरू के साथ 24 वर्ष की आयु में फाँसी दे दी गई। 27 फरवरी, 1931 ई. को चन्द्रशेखर आजाद भी अंग्रेजो से लड़ते हुए शहीद हो चुके थे।

भगतसिंह

1930 ई. में ही देशभर में आन्दोलन हुआ तब उसका नेतृत्व गाँधीजी ने किया। उन्होंने कहा कि अवज्ञा तो हो पर सविनय अवज्ञा हो। इसमें कहीं हिंसा और द्वेष ना हो। अतः इस आन्दोलन को 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' नाम दिया। सरकार ने असहयोग आन्दोलन से भी ज्यादा दमन इस आन्दोलन में भाग ले रहे लोगों पर किया। पर लोग अहिंसक तरीके से सरकार के नियमों की अवहेलना करते रहे।

बगैर सरकार की इजाजत के हिन्दुस्तानी नमक भी नहीं बना सकते थे। अतः गाँधीजी के नेतृत्व में लोगों ने नमक बनाने की ठानी। नमक बनाने के लिए विशाल संख्या में लोग गुजरात से दाण्डी नामक स्थान पर पहुँचे । पुलिस ने लोगों पर लाठियों से वार किया। लोग लाठी खाकर गिरते रहे परंतु न तो उन्होंने पुलिस पर वार किया, न पीछे हटे। बस 'भारत माता की जय' बोलते हुए आगे बढ़ते रहे।

अब तक बाकी दुनिया के लोगों में भी जिज्ञासा जाग चुकी थी कि आखिर हिन्दुस्तान में हो क्या रहा है ? दुनिया के कई फिल्मकार व पत्रकार भारत आए। उन सबने दुनिया को बताया कि हिन्दुस्तान में किस

तरह से सरकार लोगों पर ज्यादती कर रही है। अब दुनिया भर के लोगों को आभास हुआ कि वास्तव में हिन्दुस्तानियों की लड़ाई तो इस बात की है कि अंग्रेज भारत छोड़ दे।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 ई. में देश ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया। सरकार ने सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। वे लोग जो अब तक विरोध में शामिल नहीं होते थे वे भी मैदान में आ गए। यह सब अगस्त 1942 में हुआ। अतः इसे अगस्त क्रान्ति या भारत छोड़ो आन्दोलन कहते हैं। यह राष्ट्रीय स्वाधीनता का जन आन्दोलन था। इसका प्रभाव सम्पूर्ण भारत में देखा गया। युवाओं ने इस आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

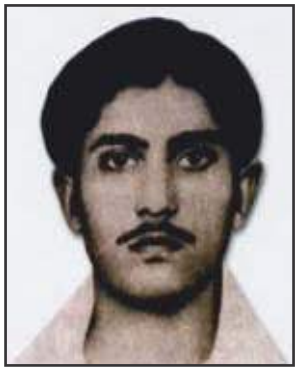
हेमू कालाणी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के युवा शहीद हेमू कालाणी का जन्म 23 मार्च 1923 ई. को सिंध के सख्खर में हुआ था। महात्मा गाँधी के आन्दोलन से प्रभावित हेमू ने प्रभात फेरियों में जाना शुरू कर दिया। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। 1942 ई. में हेमू को गुप्त जानकारी मिली कि अंग्रेजी सेना की हथियारों से भरी रेलगाड़ी रोहडी शहर (सिंध) से होकर गुजरेगी। हेमू ने रेल पटरी को अस्त व्यस्त करने की योजना बनाई। दुर्भाग्य से वहाँ तैनात सुरक्षाकर्मियों की नजर उस पर पड़ गई। हेमू को गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत ने उन्हें फाँसी की सजा सुनाई। फाँसी से पहले हेमू को उनकी आखिरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने फिर से पवित्र भूमि भारतवर्ष में जन्म लेने की इच्छा जाहिर की।

'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ यह युवा स्वतन्त्रता सेनानी 21 जनवरी 1943 ई. को सख्खर में हँसते –हँसते फाँसी के फँदे पर झूल गया।

वीर सावरकर

महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर गाँव में 28 मई 1883 ई. को विनायक दामोदर सावरकर का जन्म हुआ। पिता दामोदर पंत सावरकर एक राष्ट्रभक्त थे तथा माता राधा बाई धर्मनिष्ठ महिला थी। मैट्रिक की पढ़ाई के लिए विनायक पूना गए और तिलक के संपर्क में आए। विनायक इन्हें अपना गुरू मानते थे। कानून की पढ़ाई के लिए विनायक बंबई आए। उस समय इंग्लैण्ड में रह रहे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विनायक के लिए लंदन में उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की और वे पढ़ाई के लिए लंदन रवाना हो गए।

लन्दन में विनायक ने श्यामजी कृष्ण वर्मा के 'इण्डिया हाउस' को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया। यहीं उन्होंने '1857 का स्वातन्त्र्य समर' नामक क्रान्तिकारी पुस्तक लिखी जो बाद में अंग्रेजों ने प्रतिबन्धित कर दी। उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कुछ दिन ब्रिटिश जेल में रखने के बाद मारिया नामक जलयान से उन्हें बम्बई भेज दिया।

रास्ते में विनायक सुरक्षाकर्मियों को चकमा देकर जहाज से निकल गए और तैर कर फ्रांस की सीमा

तक पहुँच गए पर पकडे गए और फ्रान्स की सरकार ने उन्हें अंग्रेजों को सौंप दिया। भारत में सावरकर पर मुकदमा चलाया गया। देशभक्ति प्रेरित योजनाओं, गतिविधियों तथा उसकी दुर्दम्यता से भयभीत अंग्रेज सरकार ने विनायक सावरकर को एक नहीं बल्कि दो आजन्म कारावास की सजा देकर, अंडमान निकोबार भेज दिया। 11 वर्ष तक अण्डमान की सेलूलर जेल में काले पानी की कठोर यातनापूर्ण सजा काटी । लौटने पर विनायक को रत्नागिरि (महाराष्ट्र) में नजरबन्द कर दिया गया। जहाँ से 1937 ई. में उन्हें मुक्ति मिली।

विनायक ने भारत विभाजन का प्रबल विरोध किया। 26 फरवरी 1966 ई. को इस स्वातन्त्र्य वीर ने अन्तिम सांस ली।

23 जनवरी 1897 ई. को सुभाषचन्द्र बोस का जन्म हुआ था। बड़े होकर आई.सी.एस.की परीक्षा पास की, पर नौकरी नहीं की। बाद में भारत की आजादी के लिए सक्रिय रूप से आन्दोलनों में भाग लिया और दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1943 ई. में आजाद हिन्द फौज की कमान संभाली और आजादी के लिये प्रत्यक्ष लड़ाई लड़ी। 1944 ई. के सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज के अभियान एवं 1946 ई. में नौ सैनिकों के विद्रोह से अंग्रेजी सरकार को पता चल गया कि अब हिन्दुस्तान के सैनिक भी इस सरकार के साथ नहीं रहना चाहते। कहा जाता है कि 18 अगस्त 1945 ई. को एक विमान दुर्घटना में रहस्यमय तरीके से सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई जो आज भी विवादित है। दो वर्ष बाद 14 अगस्त 1947 ई. को अंग्रेजों ने देश का विभाजन कर 15 अगस्त 1947 ई. को देश को स्वतंत्र कर दिया।

सुभाषचंद्र बोस

राष्ट्रीय आन्दोलन और राजस्थान

राजस्थान में किसान वर्ग ठिकानेदारों और जागीदारों के अत्याचारों से तंग आ चुका था। इसका पहला आभास तब हुआ जब बिजौलिया में जागीरदारों के खिलाफ किसान आन्दोलन शुरू हुआ। बिजौलिया में किसानों को 84 किस्म के कर देने पड़ते थे। 1913 ई. में साधु सीताराम दास के नेतृत्व में किसानों ने इस तरह की अत्याचारी कर व्यवस्था का विरोध किया। 1916 ई. में विजयसिंह पथिक और माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में किसानों ने बेगार करने से मना किया और कर भी नहीं दिए। आने वाले समय में अन्य रियासतों और ठिकानों के किसानों ने भी बिजौलिया किसान आन्दोलन से सीख लेकर बेगार और कर बंद कर दिए।

विजयसिंह पथिक

साधु सीताराम दास

पहले तो हर रियासत का किसान आंदोलन अलग–अलग चलता रहा। फिर वे हिन्दुस्तान के स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ने लगे। लगभग सभी रियासतों में प्रजा मण्डल का गठन हुआ।

प्रजा मण्डल किसानों की समस्याओं के अलावा रियासतों में मौजूद बदहाली के खिलाफ भी आवाज उठा रही थी। हर रियासत में माँग उठी कि रियासत में उत्तरदायी शासन स्थापित हो। कहीं–कहीं प्रजा

मण्डल के ही नेताओं को स्थानीय मंत्रिमंडल में शामिल भी कर लिया गया। जब देश में 1942 ई. में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ तो प्रजा मण्डल ने माँग रखी कि रियासतें भी अंग्रेजों से नाता तोड़ें।

इस पर कई नेताओं को जेल में डाल दिया गया। नेताओं के बंदीकरण से लगभग हर रियासत में लोग भड़क उठे और लोगों ने आंदोलन किया। डूँगरपुर में आदिवासियों की समस्याएँ भी प्रजा मण्डल ने उठाई। प्रतापगढ़ में अमृतलाल के नेतृत्व में हरिजन सेवा समिति का गठन किया गया।

गतिविधि–

अपने क्षेत्र में प्रजामंडल में शामिल लोगों के नाम पता करो और जानो कि यहाँ प्रजामंडल किस तरह से काम कर रहा था।

राजस्थान के क्रान्तिकारी नेता

अर्जुन लाल सेठी–अर्जुनलाल सेठी का जन्म 1880 ई. में जयपुर में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. उत्तीर्ण किया। जब सेठी को जयपुर के प्रधानमंत्री का पद प्रस्तावित किया गया तो उन्होंने कहा– "श्रीमान् ! अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को कौन निकालेगा ?"

अर्जुन लाल सेठी

वे देश सेवा का व्रत ले चुके थे । सेठी जी ने केसरीसिंह बारहठ,गोपाल सिंह खरवा आदि के सहयोग से राजस्थान में एक क्रांतिकारी संस्था का निर्माण किया। अल्प समय में ही जयपुर में स्थापित वर्द्धमान विद्यालय देशभर के क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण का मुख्य केन्द्र बन गया । निमाज हत्याकाण्ड तथा दिल्ली षड्यंत्र में हाथ होने के सन्देह में आप पकड़े गये और बन्दीगृह में डाल दिये गये । सेठी जी के विरूद्ध कोई ठोस प्रमाण न मिलने के उपरान्त भी जयपुर में उन्हें नज़र बन्द रखा गया तथा पाँच वर्ष पश्चात् वेलूर जेल में भेज दिया गया। वहाँ जेल अधिकारियों के दुर्व्यवहार के कारण कई दिनों तक अनशन किया।

1920 ई. में रिहा होने पर सेठी कांग्रेस में शामिल हो गए पर नीति संबंधी मतभेदों के चलते कांग्रेस से अलग हो गए और जीवनयापन के लिए उन्होंने अजमेर की दरगाह में मुसलमान बच्चों को अरबी–फारसी पढ़ाना शुरू कर दिया। 22 सितम्बर, 1941 ई. को अजमेर में सेठी का देहांत हो गया।

राव गोपाल सिंह खरवा–अजमेर–मेरवाड़ा में खरवा ठिकाने के राव गोपाल सिंह राजस्थान के क्रान्तिकारी आंदोलन के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित रहे। वे आरंभ से ही आर्य समाज से प्रभावित थे।

राव गोपाल सिंह खरवा

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान रास बिहारी बोस व सचिन्द्रनाथ सान्याल ने उत्तरी भारत में सशस्त्र क्रांति की एक योजना तैयार की। राव गोपाल सिंह इस योजना से जुड़ गए, लेकिन क्रान्तिकारियों के एक सहयोगी ने योजना की सूचना पुलिस को दे दी। फलतः योजना विफल हो गई। जून, 1915 ई. में ब्रिटिश सरकार ने राव गोपाल सिंह को आदेश दिया कि वह 24 घंटे में खरवा छोड़कर

टाडगढ़ चला जाए। टाडगढ़ में राव पुलिस निगरानी में रहे। 10 जुलाई 1915 ई. को वह टाडगढ़ से भाग निकले और सलेमाबाद में पकड़े गये और उन्हें दिल्ली के तिहाड़ जेल में भेज दिया गया। यहाँ से वे 1920ई. में रिहा हो गये । बाद में वे रचनात्मक कार्यो में लग गये । मार्च 1956ई. में उनका स्वर्गवास हो गया ।

केसरी सिंह बारहठ–केसरीसिंह का जन्म 1872 ई. में शाहपुरा (भीलवाड़ा) के समीप गाँव देवपुरा में हुआ। बाद में वे उदयपुर के महाराणा के पास चले आए। इस दौरान श्यामजी कृष्ण वर्मा, रास बिहारी बोस व अन्य क्रांतिकारियों से उनका सम्पर्क हुआ। 1903 ई. में होने वाले दिल्ली दरबार में मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह के सम्मिलित होने के समाचार मिले तो क्रांतिकारियों को महाराणा का यह कदम अनुचित लगा । महाराणा फतहसिंह जब दिल्ली दरबार में भाग लेने के लिए जाने लगे तो केसरीसिंह ने महाराणा को 13 सोरठें 'चेतावणी रा चुंगट्या' भेजे। इन्हें पढ़कर महाराणा दिल्ली पहुँचकर भी दरबार में शामिल नहीं हुए।

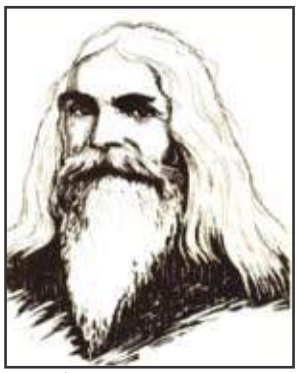
केसरीसिंह बारहठ

सरकारी गोपनीय रिपोर्ट के अनुसार उन पर राजद्रोह, बगावत, ब्रिटिश फौज के भारतीय सैनिकों को शासन के विरूद्ध भड़काने व षड्यंत्र में शामिल होने के साथ–साथ प्यारेराम नामक साधु की हत्या का आरोप भी लगाया गया।

उन्हें 20 वर्षों की सजा देकर हजारीबाग सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया, जहाँ से 1920 ई. में रिहा किया गया। केसरी सिंह का शेष जीवन कोटा में बीता। 1941 ई. में इस स्वातंत्र्य वीर का निधन हो गया।

प्रताप सिंह बारहठ–केसरी सिंह बारहठ के पुत्र प्रताप सिंह बारहठ का जन्म 24 मई, 1893 ई. को उदयपुर में हुआ। प्रतापसिंह बारहठ ने उस परिवार में जन्म लिया, जिसमें देशभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी थी। केसरीसिंह ने प्रताप को अर्जुनलाल सेठी के वर्द्धमान स्कूल में पढ़ने भेजा। शीघ्र ही प्रतापसिंह भी क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये। हैदराबाद (सिंध) से बीकानेर लौटते हुए जोधपुर के पास 'आशानाड़ा' स्टेशन पर स्टेशन मास्टर ने धोखा देकर प्रतापसिंह को पकड़वा दिया। प्रतापसिंह को बरेली जेल में रखा गया।

प्रताप सिंह बारहठ

अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स क्लीवलैंड प्रताप पर रास बिहारी बोस व अन्य क्रान्तिकारियों की जानकारी देने के लिए दबाव डालता रहा, पर प्रताप टस से मस न हुआ। इस पर क्लीवलैंड ने कहा, "तुम्हारी माँ तुम्हारे बिना दुःखी है, वह आँसू बहाती रहती है।" तो प्रताप सिंह ने कहा– "तुम कहते हो कि मेरी माँ मेरे लिए रात–दिन रोती है और बहुत दुःखी है, किन्तु मैं अन्य सैंकड़ों माताओं के रोने का कारण नहीं बन सकता।" इस पर उसे तरह–तरह की घोर यातनाएँ दी जाने लगी, जिसके कारण 27 मई 1918 ई. को जेल में उनका देहांत हो गया।

जोरावर सिंह बारहठ–यह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहठ के छोटे भाई थे। 1912 ई. को क्रान्तिकारी जोरावर सिंह बारहठ ने दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज के जुलूस में वायसराय पर बम फेंका। वायसराय बच गया, परन्तु महावत मारा गया। जोरावर सिंह भूमिगत हो गए। बाद में उनका अधिकांश समय

मालवा और वागड़ क्षेत्र में साधु वेश में अमरदास वैरागी के रूप में व्यतीत किया। जोरावर सिंह पर आरा मर्डर केस के मुकद्दमें में वारंट जारी था। परन्तु जोरावर सिंह आजीवन अंग्रेजों के पकड़ में नहीं आए।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रान्तिकारी

सुखदेव

राजगुरू

रामप्रसाद बिस्मिल

चन्द्रशेखर आजाद

चापेकर बन्धु

आओ करके देखे–

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में इन क्रान्तिकारियों के योगदान के बारे में जानकारी संकलित कीजिए।

शब्दावली

वैधानिक	–	कानून सम्मत
विसर्जित	–	बिखरना
सविनय अवज्ञा	–	विनम्रता पूर्वक बात मानने से इन्कार करना

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई ?
   (अ) 1885 (ब) 1919
   (स) 1942 (द) 1905 ( )
2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ ?
   (अ) 1897 (ब) 1857
   (स) 1947 (द) 1950 ( )
3. 'चेतावणी रा चुंगट्या' किसकी रचना हैं ?
4. राजस्थान के क्रान्तिकारियों के नाम लिखिए ।
5. रोलट एक्ट क्या था ?
6. लाल, बाल, पाल के नाम से कौन प्रसिद्ध हुए ? नाम लिखे ।
7. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का वर्णन कीजिए ।
8. सविनय अवज्ञा आन्दोलन का वर्णन कीजिए ।
9. भारत छोड़ो आन्दोलन का वर्णन कीजिए ।
10. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य घटनाओं का वर्णन कीजिए ।

गतिविधि–

1. **संकलन करें –**
   (1) स्वतंत्रता संग्राम पर साहित्यकारों द्वारा लिखे गये लोकगीत एवं कविताएँ ।
   (2) स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र ।
2. राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रमुख घटनाओं की तिथि वर्षवार तालिका बनाएँ ।